Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 9, Issue 2 | November 2021 - April 2022 | pp. 181-184

पाली जिले में भूमि उपयोग प्रतिरूप का एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. गौरव कुमार जैन

सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

कैलाश चन्द्र मेघवाल

शोधार्थी, भूगोल विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

प्राकृतिक संसाधनों में भूमि एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है। इसी भूमि में सम्पूर्ण संसाधन पाये जाते है यह अध्ययन क्षेत्र लूनी बेसिन में स्थित है इसका उत्तरी पश्चिमी भाग मैदानी है तथा पूर्वी भाग की सीमा पर्वतीय है इस क्षेत्र के भूमि उपयोग पर निर्भर है इस क्षेत्र में इस क्षेत्र के उत्तर पूर्व में खनन को बढ़ावा मिला है इस क्षेत्र पर जनसंख्या का भार निरन्तर बढ़ता जा रहा है अत: इसके अनुकूलतम उपयोग की आवश्यकता है। ताकि बढ़ती जनसंख्या का भरण पोषण सम्भव हो सके। प्रस्तुत शोध पत्र में भूमि उपयोग का अध्ययन किया गया है जिसमे द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है।

संकेताक्षर— *भूमि उपयोग, नियोजन, शस्य प्रतिरूप, संसाधन, ग्रामीण नगरीय विकास*

प्रस्तावना

भूमि उपयोग परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्राकृतिक परिदृश्य को प्रत्यक्ष रूप से बस्तियों आर्थिक उपयोग वानिकी गतिविधियों जैसे मानव प्रेरित भूमि उपयोग के लिये परिवर्तित कर दिया जाता है।

मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही भूमि संसाधन का अधिकाधिक उपयोग मानव का चरम लक्ष्य रहा है, क्योंकि उसकी संस्कृति और सभ्यता के मूल में भूमि का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है मानव की आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक विचारधारा को भू संसाधन और उसके उपयोग की अवस्थाओं ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। भूमि उपयोग की प्रारम्भिक अवस्था में सीमित आवश्यकता और अपार भूमि उपलब्धता के कारण मानव के लिए समस्या नहीं थी, लेकिन बढ़ती आबादी, अधिकाधिक आवश्यकता, सीमित होती भूमि, और भू संसाधन का अवैज्ञानिक उपयोग आधुनिक युग में भारत जैसे कृषि प्रधान देशों के लिए एक विकट समस्या का रूप धारण कर लिया है। लम्बी अवधि से भूमि के अवैज्ञानिक उपयोग ने पारिस्थितिकी को असन्तुलित कर दिया है भूमि उपयोग में अर्थिक संसाधनों का अधिकाधिक विनियोजन कर भूमि की सघनता को बढ़ा दिया जाता है, जो जन जीवन के जीवन स्तर को उन्नयन करने की ओर अग्रसित करता है।

भारत में प्रति परिवार भूमि की कमी तथा उसका इधर–उधर बिखरा होना कृषि अर्थव्यवस्था के लिए अनुकूल नहीं है। बिखराव के कारण नियोजित कृषि कार्य करना सम्भव नहीं हो पाता। जौनपुर जनपद गंगा– गोमती के जलोढ़ से निर्मित एक समतल तथा उपजाऊ मैदान है और यहाँ के निवासियों के लिए प्रमुख संसाधन आधार भूमि है अध्ययन क्षेत्र के किसी भी भौगोलिक तत्व का विश्लेषण कृषि के सन्दर्भ में किया जा सकता है भूमि उपयोग का प्रारूप क्षेत्र विशेष के प्राकृतिक पर्यावरण एवं मानवीय क्रियाकलाप से अत्यधिक प्रभावित होता है। प्राकृतिक तत्वों में धरातलीय उच्चावच विशेष पर मिट्टी की संरचना स्वरूप एवं उर्वरा भूमि उपयोग के प्रारूप को निश्चित करने में प्रमुख कारक है।

भूमि उपयोग का विद्यमान स्वरूप संसाधन के विभिन्न प्रकार के कालक्रमिक उपयोग का प्रतिफल है इस काल क्रमिक उपयोग को सांस्कृतिक तत्वों जैसे जनसंख्या का घनत्व भू स्वामित्व का स्वरूप सिंचाई की सुविधा एवं भू उपयोग सम्बन्धी ज्ञान ने बहुत प्रभावित किया है विभिन्न नहर परियोजनाओं एवं मानव

ISSN 2348-3857

तकनीक उर्वरकों के प्रयोग उसर व कृषि अयोग्य भूमि का कृषिगत भूमि में परिवर्तित होने से झीलों नदियों के पानी का उपयोग होने तथा सम्पूर्ण प्रदेश में आधुनिक कृषि सम्बन्धी उपकरणों के प्रयोग से भूमि का अधिकाधिक उपयोग सम्भव हुआ है। अध्ययन क्षेत्र में नियोजित भूमि उपयोग के माध्यम से ग्रामीण विकास को तीव्र गति प्रदान की जा सकती है जो इस अनुसंधान का मुख्य लक्ष्य है।

अध्ययन क्षेत्र

पाली जिला भौगोलिक दृष्टि से अरावली के पश्चिम में बसा एक त्रिभुजाकार जिला है यह राज्य के मध्य में बसा हुआ आठ जिलों की सीमा को स्पर्ष करने वाला जिला है इसका ज्यामितीय विस्तार 24°45'से 26°25' उत्तरी अक्षांश तथा 72°47' से 74°18' पूर्वी देशान्तर है जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 12387 वर्ग किमी है जो राज्य के कुल क्षेत्रफल का 36.11प्रतिशत है। समुद्रतल से औसत ऊँचाई 200 से 300 मीटर है पाली जिले की जलवायु अर्द्ध शुष्क प्रकार की है पाली जिले की वास्तविक जनसंख्या सन् 2011 के अनुसार 2037573 है।

पुरुषों की जनसंख्या 1025422 तथा स्त्रियों की जनसंख्या 1012151 है जिले का घनत्व 165 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। लिंगानुपात 987 स्त्रियाँ प्रति 1000 पुरुषों पर है। तथा साक्षरता 62.39 प्रतिशत है। प्रशासनिक दृष्टि से 10 तहसीलें तथा 1041 गाँव 11 कस्बे है।

पाली जिले की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है जिसकी अधिकांश जनसंख्या का आजीविका का मुख्य साधन कृषि तथा कृषि आधारित उद्योग है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य

- जिले की भूमि उपयोग प्रतिरूप का अध्ययन करना
- नियोजित भूमि उपयोग किस सीमा तक विकास में सहायक होता है अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग प्रतिरूप की समस्याओं को ज्ञात करना तथा सुझाव देना।

परिकल्पना

- पाली जिला कृषि प्रधान क्षेत्र के साथ-साथ औद्योगिक भी है। कृषि औद्योगिक आधार है।
- ग्रामीण विकास नियोजित भूमि उपयोग से प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित है।
- भूमि उपयोग नियोजन से सम्बन्धित योजनाओं नीतियों के माध्यम ये कृषि उत्पादकता और लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

शोध विधि

शोध पत्र में द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए भौतिक सांस्कृतिक मानचित्रों तालिकाओं का प्रयोग किया गया है। इसमें पत्र पत्रिकाओं तथा इन्टरनेट द्वारा प्राप्त आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। यह शोध पत्र व्याख्यात्मक विश्लेषणात्मक तथ्यों पर आधारित है।

भूमि उपयोग

पाली जिले का कुल क्षेत्रफल 1238700 हेक्टेयर है। भूमि संसाधन, भूमि उपयोग, भूमि समस्या एवं नियोजन की विवेचना की वह दुरी है जिसके अध्ययन के लिए उन्होने निम्न महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण बताएँ है।

- आर्थिक दृष्टि से समान समाज की स्थापना।
- भूमि संसाधन उपयोग की अवस्था।
- भूमि से अधिकतम लाभ की योजना।
- फसलगत भूमि के उपयोग में मांग के आधार पर लाभ।
- बहुउद्देश्य भूमि उपयोग की विवेचना।

पाली जिले में भूमि उपयोग प्रतिरूप (हेक्टेयर में)

खाद्य एवं कृषि मन्त्रालय द्वारा 1948 में नियुक्त टैक्नीकल कमेटी ऑन को ऑर्डनेशन ऑफ एगरीकल्चर स्टेटिस्टिक्त संस्तुति के आधार पर भूमि उपयोग का वर्गीकरण निम्न प्रकार हो-

ISSN 2348-3857

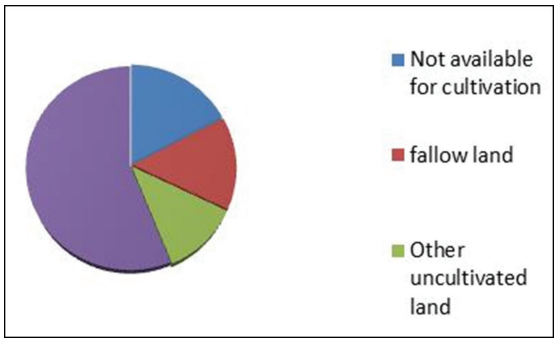

भूमि उपयोग जिला पाली 2015.16

पाली जिले में भूमि उपयोग प्रतिरूप (हेक्टेयर में)

	क्षेत्र	वर्ष 2010-11	वर्ष 2015-16
	भौगोलिक क्षेत्र	1238700	1238700
1.	वन क्षेत्र	96358	86536
2.	अवर्गीकृत कृषि उपयोग	194130	59467
3.	बंजर एव कृषि योग्य भूमि	47201	139101
4.	स्थाई चारागाह	135591	100597
5.	विविध वृक्षों एवं बागों वाली भूमि	113	354
6.	कृषि योग्य व्यर्थ भूमि	132545	49239
7.	वर्तमान परती भूमि	94962	213780
	कृषि योग्य भूमि	181862	694046

1. वन—पाली जिला जलवायु की दृष्टि से अर्धशुष्क जलवायु में आता है। वनों की उत्पत्ति में सभी भूमियाँ आती है। जो राजकीय स्वामित्व में हो या निजी स्वामित्व में हो वनों में चारागाह वाली भूमि भी इससे आती है। पाली जिले 2010-11 में 96358 हेक्टेयर भूमि पर वन जो घटकर 2015-16 में 86536 पर ही वन है जो चिन्ताजनक है। वनों में कमी जिसका सीधा की जनसंख्या का घनत्व बढ़ा है। औद्योगिक विकास से कृषि का स्तर बढ़ा है।

2. गैर कृषि कार्य में प्रयुक्त भूमि—इसके अन्तर्गत उन भूमि को सम्मिलित किया जाता है जो भवन, सड़क, रेलमार्ग, नदियों का प्रवाह क्षेत्र, नहरें आदि के प्रयोग में हो, सन् 2010-11 में 194130 हेक्टेयर भूमि भी 2015-16 में 59467 हेक्टेयर हो गई अर्थात् नदी घाटियों की भूमि का उपयोग बढ़ा है।

3. बंजन एवं गैर कृषि योग्य भूमियाँ—इसके अन्तर्गत वे सभी भूमियाँ आती है जो बंजर हो या कृषि योग्य नहीं हैं। इसके अन्तर्गत पर्वतीय, पठारी, रेगिस्तानी भूमिया आती है। इसमें भूमि को खेती योग्य बनाने में लागत अधिक आती है। पाली जिले में सन्2010-11 में 47201 हेक्टेयर भूमि थी जो बढ़कर 43760 हो गई।

4. स्थायी चारागाह—इसमें चराई वाली सभी भूमियाँ आती है। इसमें गोचर भूमि भी आती है। सन् 2010-11 में 132545 हेक्टेयर भूमि चारागाह के लिए थी जो 2015-16 में घटकर 100597 हेक्टेयर रह गई।

5. विविध वृक्षों एवं बागों वाली भूमियाँ—इसमें उनको सम्मिलित किया जाता है जो शुद्ध कृषि क्षेत्र में सम्मिलित नहीं हो किन्तु कृषि उपयोग में लाई जा सकती हो। सन् 2010-11 में पाली जिले में 113 हेक्टेयर भूमि इसमें सम्मिलित थी जो 2015-16 में 354 हेक्टेयर भूमि इसमें शामिल व अर्थात् बाग वाली भूमि में वृद्धि हुई है।

6. कृषि योग्य व्यर्थ भूमि—इसके अन्तर्गत वह भूमि जो खेती के जिए उपलब्ध हैं परन्तु पिछले 3 से 5 साल में फसल नहीं उगाई गई है। पाली जिले में सन् 2010-11 में 132545 हेक्टेयर भूमि कृषि के लिए योग्य तो थी परन्तु बेकार पड़ी थी जब 2015-16 में 492339 हेक्टेयर भूमि व्यर्थ रही अर्थात् भूमि उपयोग में वृद्धि नहीं हुई है।

7. वर्तमान परती भूमि—इसमें चालू वर्ष में भूमि को परती रखा जाता है। पाली जिले में 2010-11 में 94962 हेक्टेयर प्रति भूमि में थी जो 2015-16 में 213780 हेक्टेयर भूमि को चालू वर्ष में प्रति रखा गया।

8. कृषि योग्य भूमि—इस श्रेणी में फसल तथा फसल उत्पादन के रूप में शुद्ध बोया गया क्षेत्र सम्मिलित थे यह कुल बोये गए क्षेत्र से कम होता है। पाली जिले में सन् 2010-11 में 181862 हेक्टेयर भूमि कृषि योग्य भूमि में शामिल थी जो 2015-16 में बढ़कर 694046 हेक्टेयर शुद्ध कृषि क्षेत्र हो गया।

निष्कर्ष

पाली जिले में कुल 77.42 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है कुल क्षेत्रफल के 52.19 प्रतिशत भू भाग पर कृषि कार्य होता है कुल जनसंख्या का 74 प्रतिशत लोग प्रत्यक्ष

अप्रत्यक्ष रूप से कृषि कार्य में संलग्न है। जिले की अधिकांश जनसंख्या का आजीविका का आधार कृषि एवं कृषि आधारित उद्योग है जिले में68000 हजार लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे है क्षेत्र की बढ़ती जनसंख्या वृद्धि एवं भूमि के बढ़ते हुए लगाव से अध्ययन क्षेत्र में न केवल भूमि उपयोग में परिवर्तन हुआ है बल्कि लोगों के अर्थ तंत्र पर भी प्रभाव पड़ा है सरकार द्वारा चलाये जा रहे भूमि सुधार कार्यक्रम सहकारिता चकबन्दी जैसे नियोजित भूमि वृद्धि सम्भव हुई है लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है मनरेगा कार्यक्रम से भी भूमि उपयोग में सन्तुलन स्थापित हुआ है। अत: क्षेत्र के भूमि उपयोग प्रतिरूप के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भूमि उपयोग वर्गों में एकरूपता नहीं है भौतिक, प्राकृतिक आर्थिक सामाजिक परिस्थितियों के फलस्वरूप समय के साथ परिवर्तित होता रहता है पाली जिले का अधिकांश समतल उपजाऊ भूमि से बना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, ब्रजभूषण, कृषि भूगोल, ज्ञानदोय प्रकाशन, गोरखपुर, 1988, पृ.सं. 34
2. कुमार, रतन, भूमि उपयोग परिर्वतन एवं नवाचार, शोध प्रबन्ध वीर बहादुर पूर्वाचंल वि.वि., जौनपुर, 1999, पृ.सं. 42-75
3. मामोरिया, चतुर्भुज एवं मिश्रा, जे.पी., भारत का भूगोल, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2004
4. अताउल्लाह, मो., बिहार का आधुनिक भूगोल, विलिएन्ट प्रकाशन, पटना, 2008
5. गौतम, अलका, संसाधन एवं पर्यावरण, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज, 2014
6. तिवारी, आर.सी. एवं सिंह, बी.एन., कृषि भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन, प्रयागराज, 2014, पृ.सं. 38-69
7. खुल्लर, डी.आर., भूगोल, मैक्गाहिल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ.सं. 77-79
8. मौर्य, एस.डी., मानव एवं आर्थिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज, 2015, पृ.सं. 486-491
9. कुमार, प्रमिला, एवं शर्मा, कमल, मध्य प्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2010, पृ.सं. 31